Title of the project: --Hindi translation of Moola Samita, Commentary of Chakrapani in 4 volumes.
[CHARAKA SAMHITA, Sutrasthana (Volume – I)]

Principal investigator
Prof. Banwari Lal Gaur,
Former Vice Chancellor, Rajasthan Ayurveda University,
Jodhpur, Rajasthan

For further details please contact:-
Rashtriya AyurvedaVidyapeeth, Dhanwantari Bhawan,
Address : Road No 66, West Punjabi Bagh, New Delh1 – 110026.
Phone – 011-25229753, 25228548, Telefax: - 011-2522975;
E-mail: ravidyapeethdelhi@gmail.com, ayurgyan@rediffmail.com

चरकसंहिता एवं चक्रपाणि टीका का हिन्दी अनुवाद प्रो. बनवारी लाल गौड़, पूर्व कुलपति, राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा किया गया है, जिसका संपादन आयुष विभाग के वित्तीय सहायता से संपन्न हुआ है। इस कार्य के सूत्रस्थान का प्रकाशन राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा किया गया है।

पुस्तक का वैशिष्ट्य

आयुर्वेद में वर्तमान में उपलब्ध संहिताओं में चरकसंहिता का अपना विशेष महत्त्व है। यह संहिता संस्कृत के उत्कृष्ट पदों और सुव्यवस्थित वाक्यों से संनद्ध है। सम्पूर्ण संहिता तत्कालीन लेखन शैली के अनुरूप सूत्र रूप में उपनिबद्ध है। इसमें व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि की विशिष्ट विधाओं का भी उपयोग हुआ है। इन सबके कारण इसका मूल स्वरूप कहीं-कहीं अत्यन्त जटिल भी है। इस जटिलता के निवारण के लिये समय-समय पर इस पर अनेक टीकाएँ लिखी गई है। 19वीं शताब्दी तक इस पर लिखी गई सभी टीकाएं संस्कृत में हैं।

चरकसंहिता पर लिखी गई संस्कृत टीकाओं में चक्रपाणि द्वारा लिखित आयुर्वेददीपिका को सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। अतः युगानुरूपसन्दर्भ में इसकी हिन्दी टीका किया जाना उपयुक्त विचार था। इस दृष्टि से कुछ विद्वानों ने इसकी हिन्दी टीका की भी है।

भारतसरकार के आयुष-विभाग के द्वारा राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली के माध्यम से प्रो. बनवारी लाल गौड़ के प्रधानत्व में जो हिन्दी टीका करवाई है उसका अपना विशेष महत्त्व है, इसमें निम्न विशेषताएं हैं -

1. मूल के शब्दार्थ का वैशिष्ट्य - संहिता के मूलस्वरूप के अत्यन्त जटिल होने के कारण जटिल शब्दों का हिन्दी अनुवाद करते समय शब्दार्थ को ही महत्त्व दिया गया है जबकि अन्य अनुवादकों ने ऐसे शब्दों का भावार्थपरक अनुवाद किया है। किसी भी शब्द को अर्थ करते समय छोड़ा नहीं गया। इससे अर्थ की गरिमा उपलक्षित होती है।
2. आयुर्वेददीपिका का शब्दार्थ - यद्यपि चक्रपाणि ने मूल संहिता के विषय को स्पष्ट करने के लिए ही आयुर्वेददीपिका टीका लिखी है, पर यह भी संस्कृत के जटिल शब्दों में गुम्फित होने से अत्यन्त जटिल है अतः 'एषणा' हिन्दी टीका के माध्यम से इसे सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। मूल का अर्थ करते समय चक्रपाणि की टीका का ध्यान रखा गया है, यथा-यावदायुःसंस्कारात् (सू. 11/35) में संस्कार का अर्थ कारण है।
3. अन्वय - आयुर्वेद के ग्रन्थों के अनुवाद पिछले एक सौ वर्षों से हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में होते आए है, पर श्लोकों का अन्वयपरक अर्थ किसी ने भी नहीं किया। यह इस ग्रन्थ में पहली बार हुआ है। इससे अर्थ में निरन्तरता एवं तादात्म्य के साथ-साथ यथार्थता बनी रहती है।

उदाहरण के लिए लिए च.सू. 7/42-43 को देखा जा सकता है जहाँ 'मलायनानां गुरुतया मलवृद्धिं लाघवात् मलसंक्षयं बुध्येत च अतीव सङ्गोत्सर्गात् (बुध्येत) इस अन्वय के अनुरूप अर्थ न करें तो यथार्थता नहीं रहती।

4. टिप्पणी - अर्थ करते समय कुछ ऐसे विशिष्ट शब्द मूल में या चक्रपाणि की टीका में आए हैं जिनका व्याकरणसम्मत स्वरूप या आयुर्वेदसम्मत स्वरूप टिप्पणी के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है। बहुत कुछ अनुवादकों ने या तो ऐसे पदों का भावार्थ किया है या फिर उनका अर्थ ही नहीं किया। जहाँ-जहाँ भी आवश्यक समझा गया वहाँ-वहाँ ऐसी टिप्पणियाँ की गई है। ये अनेक हैं। उदाहरणार्थ कुछ यहाँ प्रस्तुत है -

उपेयुषे (सू.1/1 पर चक्रपाणि), निषेतुः (सू. 1/32-40), व्युदस्यति (सू. 1/116-119), अनागतावेक्षणतन्त्रयुक्ति (सू. 3/1-2 चक्रपाणि), परिच्छदः (सू. 8/26 चक्रपाणि), प्रत्यवाय (सू. 14/16-19), सक्तूनां षोडशगुणोभागः (सू. 23/8-25)

5. टिप्पणी में साक्ष्य - जहाँ-जहाँ आवश्यक टिप्पणियाँ दी गई हैं वहाँ आवश्यक रूप से शास्त्रकारों का मत देकर उस टिप्पणी को प्रामाणिक बनाने का प्रयत्न किया गया है, यथा-आयतनम् (सू.11/37), पञ्चानृतान्याहुरपातकानि (सू. 12/8), पक्षाद्विरेको वान्तस्य न स्यात् (सू. 15/16)। ऐसी अनेक अन्य टिप्पणियाँ हैं जिनमें पाणिनि, मेदिनी, अमरकोश, चरक के अन्य स्थल, सुश्रुत, वाग्भट, महाभारत, चाणक्य आदि का सोदाहरण उल्लेख कर टिप्पणियाँ को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. पाठभेदों का अनुवाद - पाठभेदों का अनुवाद भी किया गया है जो अपने-आप में एक विशेषता है। पाठभेद पादटिप्पणी के रूप में हैं इन पाठभेदों में भी विशिष्ट शब्दों पर टिप्पणियाँ लिखी गई हैं, यथा- मा गाच्छरीरात् (सू. 8/28 का पाठभेद)। यह जटिल पद है अतः इस पर टिप्पणी लिखी गई। पाठभेदों का अनुवाद अब तक किसी ने भी नहीं किया।

7. आर्षवाक्य ही उपयुक्त है - बहुत से ऐसे वचन है जिन्हें देखने पर प्राथमिक रूप से यों लगता है कि यहाँ मुद्रण की अशुद्धि है लेकिन ऐसा नहीं है, ऐसे स्थानों पर यदि वे पद व्याकरण सम्मत है तो उन्हें रख कर उनका औचित्य प्रतिपादित किया गया है, यथा-नीरजस्तमाः (सू. 11/18-19), सामुद्रक या सामुद्रिक (सू. 11/30), प्राणः (सू. 11/4)।

8. संशयनिवारण का प्रयास - कहीं-कहीं शब्दों का अर्थ करते समय पदानुरूप अन्य विद्वानों द्वारा जो अनुवाद किया गया है उस सन्दर्भ में जो अर्थ होना चाहिए उस पर अपनी सम्मति दी है, यही सही है यह नहीं कहा, पर यह सही है इस सन्दर्भ में तर्क सम्मत टिप्पणी विद्वानों के विचारार्थ प्रस्तुत की है। यथा-नीरजस्तमाः (सू. 11/18-19) में अर्थ में 'रज और तमोरहित' अर्थ नहीं होगा अपितु रजोदोष का आधिक्य (तमप् प्रत्यय का तम) होना चाहिए; ऐसे ही 'पूतिघ्राणास्यगन्धश्च (सू. 5/29) में दो लक्षण न होकर एक ही लक्षण है।

9. संशय समुपस्थापित - यद्यपि आर्षवचनों में शङ्का नहीं करनी चाहिए फिर भी जहाँ व्याकरणसम्मत पद नहीं है या अन्य कारण है वहाँ टिप्पणी देकर संशय भी समुपस्थापित किया है। यथा-प्राणः (सू. 11/4) प्राणशब्द सर्वदा पुंल्लिङ्ग और बहुवचन में ही होता है, फिर भी

यहाँ एकवचन क्यों दिया गया है। 'सुषूयते' (सू. 17/23) का अर्थ चक्रपाणि ने 'इच्छति' क्यों किया। ऐसे ही संन्यास को चक्रपाणि ने स्वेदैकसाध्यः (सू. 14/16-19) कहा है पर चरक ने ऐसा कहीं भी नहीं कहा। ऐसे ही 'नष्टसंज्ञः' (सू. 14/16-19) का प्रसङ्ग विश्लेषणीय है। इन सबका उल्लेख इस अनुवाद में किया गया है।

इस तरह की अन्य अनेक विशेषताएं है जो इस हिन्दी अनुवाद को अन्य अनुवादों की अपेक्षा विशिष्टता की श्रेणी में ला देते है। यह अनुवाद पठनीय एवं मननीय है तथा अर्थ की गम्भीरता तक पहुँचाने वाला है। जो संस्कृतज्ञ है उनको आनन्द की अनुभूति कराने वाला है तथा जो कम संस्कृत जानते है उन तक उपयुक्त ज्ञान पहुँचाने की सामर्थ्य रखता है।